रात्रि क्लास 18/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा और वरसा याद है?

नई दुनिया के लिए क्या नई चीज़ें सुनाई? नई दुनिया का आवाज़ भी तुम सुनते हो। आवाज़ करते भी तुम हो। मनुष्य तो नई दुनिया को ख्याल में भी नहीं ला सकते; क्योंकि भक्ति रूपी अज्ञान नींद में हैं। बहुत धैर्य से, युक्ति से चलना होता है। कोई भी समझ न सके। तुम गुप्त अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। खास है पवित्रता की बात। बच्चे भी ऐसे कहते हैं कि हमको पावन बनाओ। जब बाप पावन बनाने आते हैं तब बनते नहीं हैं। कोई–कोई तुम्हारे जैसे जो होंगे वह तो समझेंगे हमने ही बाप को बुलाया है। अभी बाप कहते हैं ऐसे पावन बनो। वह तो समझते हैं 40 हजार वर्ष अजन हम बुलाते रहेंगे। इसलिए तुम्हारे ऊपर विश्वास नहीं करते। कल्प2 ऐसे करते होंगे। अचानक मौत आ जाता है। जो कुछ होना है कल्प पहले मिसल ही होना है। धीरे–धीरे समझते जावेंगे। बाप कहते हैं अभी भक्तिमार्ग का अन्त है। मैं ज्ञान से सद्गति करने आया हूँ। ऐसे नहीं कहते भक्ति छोड़ो। वह समझ आवे ही आवेगा। भक्ति है रात। ज्ञान है दिन। अगर भक्ति भी करते हैं तो रात में हैं। दोनों इकट्ठे चल न सके। एक तरफ जरूर करना पड़ेगा। भक्ति और ज्ञान दोनों चल न सकेगा। एक तरफ लेना पड़ेगा ज्ञान का नशा चढ़ेगा तो। भक्ति है कर्म काण्ड का दान–पुण्य, यात्राएँ आदि करना। बाप कहते हैं यह करने से कोई वरसा ले न सके। मेरा बच्चा बनने से ही वरसा पा सकेंगे। भक्त लोग तो सर्वव्यापी कह देते हैं। वह बाप नहीं समझते। तो इसमें लोक लाज कुल की मर्यादा छोड़नी पड़ती है। वह है कलियुगी कुल की मर्यादा विकार में जाना, शादी मुरादी में जाना। मीरा का मिसाल है ना। उनकी दिल कृष्ण से लगी हमारा कृष्ण निर्विकारी फिर हम विकारी कैसे बनेगी। घड़ी–2 ध्यान में चली जाती थी। ज्ञान की बात नहीं। ऐसे भक्त बहुत हैं जो साक्षात्कार से खुश होते हैं; परन्तु बाप कहते हैं साक्षात्कार से कोई सद्गति नहीं मिल सकती है। यहाँ तो है ही पढ़ना। योग लगाना है। योग तो वास्तव में सभी लगाते हैं। बैरीस्टर द्वारा पढ़ेंगे तो उनसे योग लगावेंगे ना। यह है सूक्ष्म बात। आत्मा का योग है रूहानी बाप से। वह झूठे टीचर से योग लगावेंगे। गुरु चेला सभी झूठे। सद्गति भी मिल न सके। वह समझते हैं गुरु करने से सद्गति मिलेगी; परन्तु वह गुरु लोग तो सद्गति दे न सके। बाबा कोई शास्त्र नहीं पढ़ाते हैं। यज्ञ, तप, व्रत–नेम आदि तो बहुत रखते आये हैं। इन सभी बातें से बाप कहते हैं मेरे से पूरा वरसा ले नहीं सकेंगे। भक्ति न छोड़ी है फिर ज्ञान भी लेते हैं तो यह तरफ भारी हो जावेगा। बाकी व्रत–नेम से कोई पाप विनाश तो होंगे नहीं। फिर सजा खाकर थोड़ा पद पा लेंगे। ज्ञान का वजन भारी है। इसलिए स्वर्ग में आ जावेंगे। भक्ति करना कोई विकार नहीं है। सर्वव्यापी कहना वह पाप है। बाकी व्रत–नेम आदि रखना पाप नहीं है। ज्ञान के कारण स्वर्ग में आ जावेंगे। फिर यह भी छोड़ते जावेंगे तो अच्छा पद पा लेंगे। बाबा खुद भी कहते हैं घर में अगर झगड़ा हो, कोई नाराज़ हो तो युक्ति से नाम मात्र पूजा करो, भक्ति करो। हर्जा न है। मूल बात है ही विकार की। व्रत–नेम रखने से पतित नहीं बनते। पतित विकार से बनते हैं। व्रत–नेम रखना है अच्छा। कोई–कोई तन्दुरुस्ती के लिए भी व्रत–नेम आदि रखते हैं। इससे पाप नहीं चढ़ता। इसको कहा जाता है रीलिजन इज माइट। मुख्य है पाप की बात काम पर। इन पर जीत पाने से ही जगतजीत बनेंगे। अर्थात् स्वर्ग में आ जावेंगे। फिर जितना अच्छा पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। सर्विसएबुल बन आप समान बनावे तो महाराजा–महारानी भी बन सकते हैं। मार्जिन बहुत है। मंदिर में जाना, ग्रन्थ पढ़ना, जप साहब आदि पढ़ना यह भी कोई बुरा काम नहीं। अच्छा काम है। इनसे पाप कोई नहीं बनता। मूल बात होती है विकार की। बहुत बच्चे गुप्त रहते हैं। किसको भी पता न पड़े। यह महामंत्र है। बेहद के बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो इस योग अग्नि से पाप भस्म होंगे और बाप का वरसा सुख और शान्ति पावेंगे। आरग्यु करने की दरकार नहीं। सिर्फ बोलो बाप ऐसे कहते हैं। सभी आत्माओं

का बाप कहते हैं मुझे याद करो। मैं पतित–पावन हूँ। तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। भक्ति मार्ग में तो ढेर प्रश्न हैं। यह ज्ञान शास्त्रों में नहीं है। यह है भगवानुवाच अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म होंगे। यह कहने से कब कोई बिगड़ेंगे नहीं। अन्त में भी बाप कहेंगे जास्ती क्या समझावे। मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। दैवी गुण धारण करो। बस। जास्ती प्रश्न–उत्तर में जाना न है। बहुत टूमच आरग्यु आदि करने से गला ही रुक जाती है। जास्ती बोलने की दरकार ही नहीं। बोलो, बाप की श्रीमत है अपन को आत्मा समझ मुझ पतित–पावन बाप को याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे। सतोप्रधान दुनिया के मालिक बन जावेंगे।

जहाँ प्रदर्शनी अच्छे स्थान पर होती है तो मदद करनी चाहिए। विवक कहता है अच्छा स्थान मिला है तो अच्छे–2 बच्चे जाकर समझावेंगे तो वह जगह भी हमेशा के लिए दे देंगे। बाबा की तो दिल होती है। उन्हों को समझाकर मक्खन कर देवें। अरे, यह तो विश्व का मालिक बनाने की युक्ति बताते हैं। अनेकों का कल्याण होगा। उनकी आशीर्वाद तुमको मिलेगी। तो युक्ति से मकान हाथ कर लेना चाहिए। दूरनदेश बुद्धि वाले झट ले लेंगे। भागेंगे सर्विस करने लिए। ऐसे नहीं यह मेरी ड्युटी नहीं है। बेहद की सर्विस में रहना पड़ता है। जहाँ सर्विस देखो वहाँ फट से भागना चाहिए। वास्तव में महिमा सारी एक की है। जप साहब है ना। एक ओंकार..... इसमें सारी महिमा एक बाप की है। सर्विस में सभी तरफ ख्याल रखना चाहिए। सभी तरफ जाना चाहिए राय देना चाहिए। फिर कोई माने न माने। कोई भी बात पर बिगड़ना न चाहिए। बड़ी धैर्यता चाहिए बच्चों में। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।

<u>प्वाइंट्स</u> :– बाप कहते हैं हम तुमको गोरा सुन्दर बनाने आये हैं तुम फिर गटर में गिर काला मुँह कर देते हो। राम को भी काला दिखाते हैं; परन्तु वह समझते थोड़े ही हैं काला क्यों है। कहेंगे यह तो अनादि चला आता है। अभी बाप इनका भी राज़ समझाते हैं। कैसे तुम गोरे फिर काले बनते हो। अभी बाप कहते हैं यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। बाप को याद करो तो जन्म जन्मान्तर का बोझा उतर जाये। फिर तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। इतना सस्ता सौदा तुम नहीं करते हो। कितना सस्ता और सहज सौदा है। मरना भी जरूर है। तो क्यों नहीं बाप से स्वर्ग का वरसा ले लेना चाहिए। सिर्फ एक जन्म पवित्र बनना है। बाबा स्त्री–पुरुष दोनों को इकट्ठा बिठाते हैं। फिर स्त्री झट हाथ दे देती है। पुरुष कहते हैं सोच करेंगे। अरे, स्त्री ने हाथ दे दिया, तुम फिर सोच क्या करेंगे। कोई पावन नहीं बन सकते तो फिर तंग करते हैं। इसलिए गाली देते हैं। कहते हैं "रास्ते चलते ब्राह्मण फँसा"। चलते–2 बाप ने इसमें प्रवेश किया तो गाली इनको खानी पड़ी। कोई–कोई किसको भेज भी देते थे खून करने लिए। तैयार हो आते हैं हम दादा को मार आते हैं। शूट कर आता हूँ। जब सम्मुख आते हैं तो कुछ कर नहीं सकते। फिर सुनाते हैं हम इस ख्याल से आये। वन्डरफुल बाप है ना। जिसको कोई भी नहीं जानता। तुम मीठे–मीठे बच्चे जानते हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप से कितनी बड़ी लॉटरी मिलती है। रावण का है श्राप। बाप का है वरसा। खेल भी है श्राप और वरसे का। अभी बाप से वरसा पा रहे हो। श्रीमत पर श्रेष्ठ बनते हो। भ्रष्टाचारी और श्रेष्ठाचारी भारत पर ही होता है। यह नॉलेज भी भारत वासियों के लिए है। भारत ही सबसे जास्ती गिरा है। बाप कहते हैं मैं सर्वव्यापी हूँ ही नहीं। सर्वव्यापी तो विकार है। मैं थोड़े ही सर्वव्यापी हो सकता हूँ। यह तो सिर्फ इस समय ही आकर पुराना चोला का लोन लेता हूँ। मैंने यह पुराना ते पुराना जूता खरीदकर उसमें प्रवेश किया है। बूट कितना बड़ा है। आत्मा कितनी छोटी इनमें आकर बैठती है।

अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप का नमस्ते।

शिवबाबा और वरसा याद है?